डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र
स० प्रा० मैथिली विभाग
सी० एम० जे० कॉलेज
दोनवारी हाट , खुटौना
मो०न०9546743796 , 9434306082
Email - mishrasm966@gmail.com
B. A II part

भाषा विज्ञानक परिभाषा एवं महत्व

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी थिक , अतएव ओकरा सतत विचार विनिमयक आवश्यकता पड़ैत छैक । एहि कार्य कें ओ अनेक ढंग सँ पूर्ण करैत छथि । यथा - बाजिकए , संकेत सँ अथवा इंगित सँ । कखनहुँ- कखनहुँ स्पर्श द्वारा सेहो अपन विचार प्रकट करैत छथि । यथा - चोरक हाथ दबोनाइ आदि ।

विशद रूपसँ एहि तीनू कें भाषा मानल जा सकैत अछि मुदा साधारणतया एतेक विशद रूपें भाषाकें नहि लए कए मात्र बजबा एवं सुनबा सँ संबंधित रूपकें एहि अंतर्गत लेल जाइत अछि । एकर संबंध ध्वनि सँ अछि अछि । बाह्य ध्वनि द्वारा अर्थ व्यंजना तीन तरहें होइत अछि ।

i. ध्वनि संकेत - विचार विनिमयक संकेतमे सभसँ सफल साधन भाषा लेखन थिक ।
Ii. प्रतीक - पानक बीड़ा देब , हरदि देब , पाग राखब आदि ।
Iii. अनुकरण - ई प्रसिद्ध परम्परा सँ प्राप्त होइत अछि यथा - अभिनय , Caricature आदि ।

अनेकानेक भाषाशास्त्री लोकनि भाषाक शास्त्रीय अर्थ कें स्पष्ट करैत ओकर परिभाषा निर्धारित करबाक प्रयास कएने छथि । ' अपन व्यापकतम रूपमे भाषा ओ साधन थिक जकरा माध्यम सँ हम सोचैत छी एवं अपन विचार। कें व्यक्त करैत छी । '

' भाषा ' शब्द संस्कृतक ' भाष ' धातु सँ बनल अछि जकर अर्थ होइत अछि बाजब वा कहब , अर्थात भाषा ओ थिक जकरा माध्यम सँ बाजल जाए ।

प्लेटो सोफिस्ट मे विचार आओर भाषाक विषय मे लिखैत कहैत छथि विचार आओर भाषामे थोड़ेक अंतर अछि - " विचार आत्माक मूक वा अध्वन्यात्मक बात - चीत अछि , मुदा जखन वैह ठोर पर आबि ध्वन्यात्मक रूपें प्रकट होइछ तं ओकरा भाषाक संज्ञा देल जाइत अछि । "

स्वीट महोदयक कथन छनि जे - " ध्वन्यात्मक शब्द द्वारा विचार कें प्रकट करब सैह भाषा थिक । "

ब्लाक एवं ट्रेगरक अनुसार - " A language is a system of arbitrary vocal symbols by means of which a society group cooperates . "

क्रोचेक अनुसार - " Language is articulated limited sound organised for the purpose of expression . "

i. भाषा वक्ताक विचार कें श्रोता तक पहुँचबैत अछि । अर्थात ई विचार विनिमयक साधन अछि ।

ii. भाषा निश्चित प्रयत्नक फलस्वरूप मनुष्यक उच्चारणावयव सँ नि:सृत ध्वनि समूह अछि ।

Iii. भाषा मे प्रयुक्त शब्द सार्थक होइत अछि मुदा ओकरा विचार वा भाव सँ कोनो सहजात संबंध नहि होइत अछि , ई संबंध यादृच्छिक अछि ।

Iv. भाषाक प्रयोग समाज विशेष मे होइत अछि ।
एहि सभ बात कें ध्यान मे रखैत डॉ०भोलानाथ तिवारी भाषाक परिभाषा एहि प्रकारें देलनि अछि ।

" भाषा उच्चारणावयव सँ उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकक ओ व्यवस्था थिक जकरा द्वारा समाज विशेषक लोक परस्पर विचारक आदान - प्रदान करैत अछि । "

जाहि विषय मे भाषाक वैज्ञानिक अध्ययन कएल जाइत अछि ओकरहि भाषा विज्ञान कहल जाइत अछि।
" भाषा विज्ञान ओ विज्ञान थिक जाहिमे भाषाक एक कालिक , बहुकालिक , तुलनात्मक , व्यतिरेकी अथवा अनुप्रायोगिक अध्ययन विश्लेषण तथा तद्विषयक सिद्धांतक निर्धारण कएल जाइत अछि ।"

साधारणतः भाषाक वैज्ञानिक अध्ययन कें भाषा विज्ञान कहल जाइत अछि । वैज्ञानिक अध्ययन सँ तात्पर्य अछि सम्यक रूपसँ भाषाक बाहरी एवं भीतरी रूप , विकास आदिक अध्ययन । ई अध्ययन तीन प्रकार सँ होइत अछि - वर्णनात्मक , ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक पद्धति द्वारा । अतएव भाषा विज्ञानक परिभाषा निम्न रूपें देल जा सकैत अछि -
" भाषा विज्ञान ओ विज्ञान थिक जाहिमे भाषाक विशिष्ट आओर सामान्यक वर्णनात्मक , ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक दृष्टि सँ अध्ययन अर्थात भाषाक उत्पत्ति , गठन , प्रकृति एवं तद्विषयक सिद्धांतक निर्धारण कएल जाइत अछि । "

भाषाविज्ञान कला थिक वा विज्ञान ? भाषाविज्ञान पर विचार करैत काल कहल गेल अछि जे एहिमे भाषाक वैज्ञानिक अध्ययन कएल जाइत अछि आओर एहि रूपें ई स्पष्टतः विज्ञान अछि । विज्ञान शब्दक मूल अर्थ होइछ विशिष्ट ज्ञान । मुदा आजुक सन्दर्भ मे विज्ञानक प्रयोग केवल एके रूपमे नहि अछि । गणित , भौतिकी आओर रसायन जाहि अर्थमे विज्ञान अछि ठीक ओही अर्थमे मानव विज्ञान , राजनीति विज्ञान नहि अछि । विज्ञान मे विकल्प नहि होइत अछि आओर ओहिमे सत्यता विशेष रूपमे देश काल सँ परे रहैत अछि अर्थात सार्वत्रिक आओर सार्वकालिक होइत अछि । एहि प्रकारक बात गणित अथवा भौतिकी पर जतबा लागू होइत अछि ओतेक राजनीति विज्ञान आदि पर नहि तथापि ओकरा विज्ञान कहल जाइत अछि । एहि दृष्टि सँ कहि सकैत छी जे भाषाविज्ञान विज्ञान त अछि मुदा ओहि सीमा धरि नहि जाहि सीमा धरि गणित आदि कें बुझल जाइत अछि ।

कलाक अर्थ ललित कला वा उपयोगी कला नहि अछि जेना कि किछु लोकक धारणा छनि । एहि प्रकारें भाषाविज्ञान ललित कला वा उपयोगी कलामे कलाक जे अर्थ होइत अछि ओहि अर्थमे कला नहि अछि , मुदा बी०ए०धरि मे कलाक जे विस्तृत अर्थ अछि ओहि दृष्टिसँ कला अछि किएक त मनोविज्ञान , राजनीति आदि एहन विषय अछि जे रसायन शास्त्र , भौतिक शास्त्र आदि जकाँ निश्चित विज्ञान नहि अछि कलाक अंतर्गत मानल जाइत अछि । भाषाविज्ञान सेहो लगभग एही कोटिमे अबैत अछि । अंततः कहल जा सकैत अछि जे एहिमे भाषाक द्वारा भाषाक विवेचन कएल जाइत अछि । अतः भाषाविज्ञान विज्ञान अछि।

भाषाविज्ञानक अध्ययन सँ हमरा लोकनि कें निम्नलिखित लाभ होइत अछि - -

i. भाषा एवं शब्दमे जिज्ञासाक तृप्ति ।

Ii. प्राचीन तथा प्रागैतिहासिक संस्कृति पर प्रकाश ।
Iii. कोनो जाति वा सम्पूर्ण मानवताक मानसिक
विकासक प्रत्यक्षीकरण ।
Iv. प्राचीन साहित्यक अर्थ , उच्चारण तथा प्रयोग आदि
सँ सम्बद्ध समस्याक समाधान ।
V. सम्पूर्ण विश्वक लेल एक कृत्रिम भाषाक विकास ।
Vi. मातृभाषा एवं विदेशी भाषा कें सिखबा मे पूर्णता ,
सरलता एवं शीघ्रता ।
Vii. एक भाषा सँ दोसर भाषा मे सटीक अनुवाद मे
सहायता ।
Viii. मशीनक विकासमे सहायता ।
Ix. भाषा लिपि आदिमे सरलता एवं शुद्धता आदिक
दृष्टि सँ परिवर्तन परिवर्द्धन करबामे सहायता।
x. कोनो भाषाक लेल लिपि , व्याकरण , कोश एवं
पठन - पाठनक लेल पाठ्य पुस्तक बनएबा मे
सहायता ।
Xi. तोतरेनाइ , हकलेनाइ , अशुद्ध उच्चारण , अशुद्ध
श्रवण आदि कें दूर करबा मे सहायता ।
Xii. मनोविज्ञान , प्राचीन भूगोल शिक्षा , समाज विज्ञान
दर्शन एवं इंजीनियरिंग आदिमे सहायता ।

एहि तरहें साध्य ओ साधन दुनू रूपमे भाषा विज्ञानक अध्ययन उपयोगी सिद्ध होइत अछि ।